अध्याय - 3

लेखन (वर्तनी)

लिखते समय निम्न बातों पर ध्यान दें :

हिन्दी की ध्वनियाँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं । इन्हें लिखने का एक विशेष तरीका है । इन लिपियों को बाएँ से दाहिने तथा ऊपर से नीचे लिखा जाता है । लिपियों को लिखते समय निम्न कुछ बातों पर ध्यान रखना चाहिए :

1. खड़ी रेखा सीधी होती है और ऊपर से नीचे आती है ।
2. खड़ी रेखा बड़ी और मात्राएँ छोटी होती हैं । मात्राएँ खड़ी रेखा से ऊँचाई में कभी भी बड़ी नहीं होनी चाहिए । मात्राएँ खड़ी रेखा की आधी ही होनी चाहिए ।
3. शिरोरेखा बाएँ से दाहिने की ओर जाती है और एक शब्द के सभी वर्णों को जोड़ती है । किन्तु जिन शब्दों में 'अ, आ, थ, ध, भ, श्र, क्ष और : (विसर्ग) का प्रयोग होता है , वहाँ शिरोरेखा खंडित होती है ।
4. वर्ण को बनानेवाले गोल या अर्द्धगोल का आकार खड़ी रेखा का आधा या उससे कम ही हो सकता है । इस अर्द्धगोल को खड़ी रेखा के मध्य में ही जोड़ा जाना चाहिए ।
5. दो शब्दों की दूरी खड़ी रेखा की ऊँचाई के बराबर होनी चाहिए ।

- **कारक चिह्न लेखन –**

  कारक चिन्हों को सर्वनाम शब्दों के साथ सटाकर और अन्य शब्दों से हटाकर लिखा जाता है ; जैसे - मैंने, उसको, राम ने, नदी में ।

- **हल् चिह्न लेखन –**

  शब्दान्त में 'अ' का लोप हिन्दी की प्रवृत्ति है । हिन्दी में शब्द के अन्त में 'हल्' चिह्न नहीं दिया जाता लेकिन संस्कृत के जो शब्द मूलतः हल् चिह्न युक्त हैं, उनमें यह चिह्न लगाना अनिवार्य है; जैसे – भविष्यत् , पृथक्, विधिवत् , सत् , जगत् , प्राक् आदि ।

- **ड, ढ – ड़, ढ़ का लेखन –**

निम्न स्थितियों में ड, ढ का प्रयोग होता है –

(i) शब्द के आरंभ में, जैसे – डाली, डमरू, ढोल, ढक्कन ।

(ii) संयुक्ताक्षर में, जैसे – लड्डू, उड्डयन, बुड्ढा ।

(iii) उपसर्ग के बाद, जैसे – सुडौल, बेढंगा, निढाल ।

(iv) अंग्रेजी से आए शब्दों में, जैसे – रेडियो, पैड ।

निम्न स्थितियों में ड़ ढ़ का प्रयोग होता है –

(i) शब्द के मध्य में, जैसे – पड़ताल, छोड़ना, कढ़ी, बढ़ना ।

(ii) शब्द के अन्त में, जैसे – जड़, रगड़, बाढ़, अनपढ़ ।

- **‘र’ का लेखन –**

‘र’ के चार रूप हैं – र , ्र , र्, ्र

(i) ‘र’ के पूर्व कोई व्यंजन न हो तो ‘र’ पूरा लिखा जाता है ।
जैसे – रज, सरस, सार

(ii) ‘र’ के पूर्व पाईवाला व्यंजन हो तो ‘र’ का ्र रूप लिखा जाता है ।
जैसे – क्र, ग्र, प्र, ब्र, स्र ।।

(iii) ‘र’ र्क पूर्व ‘श’ हो तो उसका रूप – श्र हाता है ।

(iv) ‘र’ के पूर्व बिना पाईवाला व्यंजन हो तो ‘र’ का ्र रूप लिखा जाता है ।
जैसे – छ्र, ट्र, ड्र ।

(v) ‘र’ के बाद कोई व्यंजन हो तो ‘र’ का र् रूप लिखा जाता है ।
जैसे – कोणार्क, आर्य, अर्थात्, स्वर्ग ।

- **ई /यी, ए / ये का लेखन –**

कुछ शब्दों के **दो रूप** मिलते हैं । जैसे –
नयी - नई, गये - गए, खाये - खाए, कीजिये - कीजिए, दिये - दिए आदि ।

ध्यान दीजिए कि यहाँ **कभी** 'य' (श्रुति) का प्रयोग हुआ है और **कभी** नहीं हुआ है । 'नयी' में 'य' है, 'नई' में केवल स्वर ध्वनि है । आजकल स्वरात्मक यानी ई/ए रूप ही प्रयोग में आते हैं । हमें इसे अपनाना चाहिए ।

यह भी ध्यान दीजिए कि कुछ शब्दों के मूल अंश के रूप में 'य' प्रयुक्त होता है । जैसे – स्थायी, दायित्व, अव्ययीभाव आदि । ऐसे स्थानों में 'य' रहता है ।

याद रहे कि गया का गआ, दिया का दिआ रूप नहीं होते ।

- **'स्क' - 'ष्क' का लेखन –**

  तत्सम शब्दों में अ और आ के बाद 'स्क' तथा अन्य स्वरों के बाद 'ष्क' लिखे जाते हैं । जैसे –

  पुरस्कार, यास्क, भास्कर, अयस्कान्त

  परिष्कार, कनिष्क, निष्कर, पुष्कर

- **वाला –**

  संज्ञा के साथ योजक प्रत्यय के रूप में आते समय 'वाला' को मिलाकर लिखा जाता है ; जैसे – टोपीवाला, गाँववाला ।

  क्रिया के साथ 'वाला' अलग से लिखा जाता है ; जैसे – खाने वाला, पढ़ने वाला, जाने वाला ।

  'वाला' निर्देशक के रूप में आते समय अलग लिखा जाता है; जैसे – गाँव वाला मकान, कल वाली बात, पहले वाला गायक ।

- **स्वन लाघव –**

  जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनो का संयोग होता है, वहाँ हिन्दी में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो जाता है ।

  जैसे – अर्द्ध - अर्ध, कर्त्ता - कर्ता,

  परिवर्त्तन - परिवर्तन परिवर्द्धन - परिवर्धन ।

●